

शाश्वती

द्वितीयो भागः

द्वादशवर्गाय संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकम्

(ऐच्छिकपाठ्यक्रमः)



12078

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 81-7450-638-1

प्रथम संस्करण

दिसंबर 2006 पौष 1928

पुनर्मुद्रण

अक्तूबर 2007 आश्विन 1929

जनवरी 2008 पौष 1929

जनवरी 2009 पौष 1930

जनवरी 2010 माघ 1931

अप्रैल 2019 चैत्र 1941

PD 5T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2006

रु. ????

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 70 जी.एस.एम. पेपर
पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली
110 016 द्वारा प्रकाशित तथा??

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस श्री अरविंद मार्ग नयी दिल्ली 110 016	फ़ोन : 011-26562708
108, 100 फ्रीट रोड हेली एक्सटेंशन, होस्टेल्स बनारसकरी III इस्टेज बैंगलूर 560 085	फ़ोन : 080-26725740
नवजीवन ट्रस्ट भवन डाकघर नवजीवन अहमदाबाद 380 014	फ़ोन : 079-27541446
सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस निकट: धनकल बस स्टॉप पतिहटी कोलकाता 700 114	फ़ोन : 033-25530454
सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स मालीगांव गुवाहाटी 781021	फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग	: एम. सिराज अनवर
मुख्य संपादक	: श्वेता उप्पल
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: शिव कुमार
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: अबिनाश कुल्लू
सहायक संपादक	: एम. लाल
उत्पादन सहायक	: सुनील कुमार

आवरण एवं चित्रांकन

अरूप गुप्ता

पुरोवाक्

2005 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखायाम् अनुशंसितं यत् छात्राणां विद्यालयजीवनं विद्यालयेतरजीवनेन सह योजनीयम्। सिद्धान्तोऽयं पुस्तकीय-ज्ञानस्य तस्याः परम्परायाः पृथक् वर्तते, यस्याः प्रभावात् अस्माकं शिक्षाव्यवस्था इदानीं यावत् विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्ये अन्तरालं पोषयति। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकानि अस्य मूलभावस्य व्यवहारदिशि प्रयत्न एव। प्रयासेऽस्मिन् विषयाणां मध्ये स्थितायाः भित्तेः निवारणं ज्ञानार्थं रटनप्रवृत्तेश्च शिथिलीकरणमपि सम्मिलितं वर्तते। आशास्महे यत् प्रयासोऽयं 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रिय-शिक्षा-नीतौ अनुशंसितायाः बालकेन्द्रित-शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय भविष्यति।

प्रयत्नस्यास्य साफल्यं विद्यालयानां प्राचार्याणाम् अध्यापकानाञ्च तेषु प्रयासेषु निर्भरं यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभूत्या ज्ञानमर्जयितुं, कल्पनाशीलक्रियाः विदधातुं, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अस्माभिः अवश्यमेव स्वीकरणीयं यत् स्थानं, समयः, स्वातन्त्र्यं च यदि दीयेत, तर्हि शिशवः वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारः निर्धारित-पाठ्यपुस्तकमेव इति विश्वासः ज्ञानार्जनस्य विविधसाधनानां स्रोतसां च अनादरस्य कारणेषु मुख्यतमम्। शिशुषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भप्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् शिशून् शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकत्वेन एव।

इमानि उद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिक-समय-सारण्यां परिवर्तनशीलत्वम् अपेक्षितं तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परता आवश्यकी येन शिक्षणार्थं नियतेषु कालेषु वस्तुतः शिक्षणं भवेत्। शिक्षणस्य मूल्याङ्कनस्य च विधयः ज्ञापयिष्यन्ति यत् पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूत्यर्थं कियत् प्रभावि वर्तते, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध कालदृष्ट्या च विभिन्नेषु स्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, विस्मयस्य, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि- गतिविधीनां च कृते प्राचुर्येण अवसरं ददाति। पाठ्यपुस्तकस्यास्य विकासाय विशिष्टयोगदानाय राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

भाषापरामर्शदातृसमितेः अध्यक्षाणां प्रो. नामवरसिंहमहोदयानां, संस्कृतपाठ्यपुस्तकानां मुख्यपरामर्शकानां प्रो. राधावल्लभत्रिपाठिमहाभागानां, पाठ्यपुस्तकनिर्माणसमितेः सदस्यानाञ्च कृते हार्दिकीं कृतज्ञतां ज्ञापयति। पुस्तकस्यास्य विकासे नैके विशेषज्ञाः अनुभविनः शिक्षकाश्च योगदानं कृतवन्तः, तेषां संस्थाप्रमुखान् संस्थाश्च प्रति धन्यवादो व्याह्रियते।

पाठ्यपुस्तकविकासक्रमे उन्नतस्तराय निरन्तरं प्रयत्नशीला परिषदियं पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं कर्तुं विशेषज्ञैः अनुभविभिः अध्यापकैश्च प्रेषितानां सत्परामर्शानां सदैव स्वागतं विधास्यति।

नव देहली
नवम्बर 2006

निदेशकः
राष्ट्रीयशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद्

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केन्द्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

मुख्य परामर्शक

राधावल्लभ त्रिपाठी, पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

समन्वयक

कमलाकान्त मिश्र, पूर्व प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

अनिता शर्मा, प्रवक्ता, संस्कृत, विवेकानन्द स्कूल, डी-ब्लॉक आनन्द विहार, दिल्ली

केदारनारायण जोशी, अध्यक्ष, संस्कृत अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, म.प्र.

गुलाब सिंह, प्रवक्ता, संस्कृत, श.ब.कु.वि. राजकीय सर्वोदय विद्यालय, सिविल लाइन्स, दिल्ली-54

दीप्ति त्रिपाठी, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

बाबूलाल शर्मा, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान

यतीन्द्र कुमार शर्मा, प्रवक्ता, संस्कृत, श.अ.बि. राजकीय सर्वोदय विद्यालय न. 1, लूडलो कैसल, दिल्ली-54

विरूपाक्ष वि. जडुडीपाल, रीडर, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति, आ.प्र.-517507

शान्ति आर्या, प्रवक्ता, एन.सी.ई.आर.टी., गुरुग्राम, हरियाणा

सुरेश चन्द्र शर्मा, प्राचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक बाल विद्यालय, नं.-1, शक्ति नगर, दिल्ली-7

विभागीय सदस्य

कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

रणजित बेहेरा, असिस्टेंट प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् उन सभी विषय-विशेषज्ञों एवं शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना सक्रिय योगदान दिया है।

परिषद् सुरेन्द्र झा, प्राचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ कैम्पस की आभारी है, जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में अपना यथासंभव योगदान दिया है। चन्द्रशेखर दास वर्मा की कृति 'पाषाणीकन्या' के अनुवादक नारायण दाश, हृषीकेश भट्टाचार्य, देवर्षि कलानाथ शास्त्री एवं भट्ट मथुरानाथ शास्त्री प्रभृति आधुनिक साहित्यकारों की भी आभारी है, जिनकी कृतियों से प्रस्तुत पुस्तक में पाठ्यसामग्री सङ्कलित की गई है।

सत्र 2017-18 में पुस्तक के पुनरीक्षण कार्य के समन्वयन के लिए भाषा शिक्षा विभाग के के.सी. त्रिपाठी, प्रोफेसर, जतीन्द्र मोहन मिश्र, प्रोफेसर, संगीता शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, को परिषद् साधुवाद करती है। पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए परिषद् पी.एन. शास्त्री, प्रोफेसर, कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, रमेश कुमार पांडेय, प्रोफेसर, कुलपति, श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, रमेश भारद्वाज, प्रोफेसर, संस्कृत विभाग-दिल्ली विश्वविद्यालय, रंजना अरोड़ा, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, डी.सी.एस, एन.सी.ई.आर.टी., आभा झा, पी.जी.टी., संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीनपार्क, नयी दिल्ली के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती है। पुस्तक पुनरीक्षण में अनेकविध सहयोग हेतु जगदीश चन्द्र काला, जे.पी.एफ., यासमीन अशरफ, जे.पी.एफ. एवं रेखा शर्मा, डी.टी.पी. ऑपरेटर धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रकाशन कार्य में सक्रिय सहयोग के लिए भाषा शिक्षा विभाग कंप्यूटर स्टेशन के इन्चार्ज परशराम कौशिक, कॉपी एडिटर विभूति नाथ झा, सर्वेन्द्र कुमार एवं सतीश झा; प्रूफ रीडर राजमङ्गल यादव एवं डी.टी.पी. ऑपरेटर कमलेश आर्या, हरिदर्शन लोधी डी.टी.पी. ऑपरेटर, ममता गौड़ संपादक सविदा, प्रकाशन प्रभाग धन्यवाद के पात्र हैं।

भूमिका

संस्कृत भारत की आत्मा और भारतीय संस्कृति का स्रोत है। वैदिक काल से आज तक सतत् प्रवहमान संस्कृत साहित्य की अजस्र स्रोतस्विनी में हमारे ऐहिक तथा पारलौलिक चिन्तन, देशभक्ति और विश्वबन्धुत्व की भावना का प्रसार, आचार एवं विचार का मञ्जुल मणिकाञ्चन समवाय, ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में गम्भीर चिन्तन, आत्मा और परमात्मा में ऐक्य के माध्यम से प्राणिमात्र में समता के भाव की स्थापना और उदात्त संस्कारों के द्वारा श्रेष्ठ नागरिकों के निर्माण की क्षमता विद्यमान है।

संस्कृत भाषा और उसका समृद्ध वाङ्मय राष्ट्र की एक ऐसी निधि है, जो सनातन मूल्यों और अभिनव प्रवृत्तियों में समन्वय स्थापित करने की अद्भुत क्षमता से सम्पन्न है। देश की इस सर्वाधिक प्राचीन भाषा ने भारत की मध्यकालीन और आधुनिक भाषाओं के विकास में अपना महनीय योगदान किया है। आधुनिक भारत की प्रायः सभी भाषाओं ने संस्कृत से शब्दसम्पदा ग्रहण कर अपने शब्दकोश में अभिवृद्धि की है। आज समूचा विश्व संस्कृत भाषा और उसके साहित्य के महत्त्व को स्वीकार कर इसके प्रसार की दिशा में अग्रसर है। आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अध्ययन, अध्यापन और अनुशीलन की प्रवृत्ति उत्तरोत्तर विकसित हो रही है। इससे संस्कृत की सार्वभौम महत्ता स्वतः सिद्ध हो रही है।

प्रस्तुत संकलन की पृष्ठभूमि

संस्कृत के अखिल भारतीय महत्त्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्त्वावधान में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पढ़ने वाले छात्रों के लिए प्रस्तुत संकलन का सम्पादन किया गया है। विगत वर्षों में परिषद् द्वारा प्रकाशित विद्यालयीय शिक्षा के लिए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* तथा *पाठ्यपुस्तकों* की एक बार पुनः आमूल-चूल समीक्षा की गयी तथा *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005* के मानक लक्ष्यों का निर्धारण किया गया। इन लक्ष्यों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है- *भारमुक्त शिक्षा*। विद्वानों का अनुभव है कि पाठ्यग्रन्थों के दुरूह भार से बोझिल छात्र, एक बिन्दु पर पहुँचकर पाठ्यक्रम को 'भार' मानने एवं अनुभव करने लगता है। पाठ्यक्रमों की विविधता, बहुलता तथा मात्राधिक्य - तीनों मिलकर छात्र की अध्ययन-अभिरुचि को प्रायः समाप्त ही कर देते हैं। अतः आवश्यक है कि छात्रों की अध्ययन-अभिरुचि को नित्य नवीन बनाने के लिए शिक्षा (के पाठ्यक्रम) को भारमुक्त किया जाये।

जब शिक्षा भारमुक्त होगी तो वह स्वयमेव एक 'आनन्दप्रद अनुभूति' सिद्ध होगी। यह पाठ्यचर्या-2005 का दूसरा लक्ष्य है। आनन्द तभी प्राप्त होता है जब किसी कार्य में उद्वेग न हो, अरुचि न हो, थकान न हो। शिक्षा के भारमुक्त होने पर ये गुण स्वतः उद्भूत होंगे और तब छात्र स्वयं अपने पाठ्यक्रम में आकृष्ट एवं अनुरक्त होगा। इस आनन्दवृद्धि के लिए पाठ्यक्रम में ऐसे ज्ञान-सन्दर्भों का समावेश किया जाना चाहिए जिनमें उदात्त जीवन मूल्य हों, जिनमें घटना-वैचित्र्य के साथ ही साथ आधुनिक जनजीवन का प्रतिबिम्ब भी हो।

वस्तुतः शिक्षा एवं पाठ्यक्रम का यह पक्ष अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। देववाणी संस्कृत का वाङ्मय वेदों से प्रारम्भ होकर आधुनिक युग तक व्याप्त है। यह वाङ्मय भारतवर्ष के पिछले पाँच हजार वर्षों का एक जीवन्त दस्तावेज है जिसमें राष्ट्र का इतिहास, भूगोल, दर्शन, संस्कृति, सामाजिक उथल-पुथल, नित्य परिवर्तनशील जनजीवन सब कुछ विद्यमान है।

ऐसी स्थिति में आवश्यक है कि प्राचीन ग्रन्थों से हम ऐसे ही अंश पाठ्यक्रम में समाविष्ट करें जिनमें आज का भी राष्ट्रीय एवं सामाजिक परिवेश समरस हो। श्रवण कुमार की मातृपितृभक्ति, हरिश्चन्द्र की सत्यनिष्ठा, वाल्मीकि-वर्णित ऋतुओं का शाश्वत सौन्दर्य तथा कथासरित्सागर, पञ्चतन्त्र, हितोपदेश एवं पुरुषपरीक्षा आदि प्राचीन ग्रन्थों की शिक्षाप्रद कहानियाँ इसी प्रकार की हैं। इनका सन्दर्भ सार्वकालिक है अतः इनकी सम्प्रेषणीयता भी जैसी की तैसी है।

पाठ्यचर्या का तीसरा लक्ष्य भी यही निश्चित किया गया - *जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध*। इस लक्ष्य की पूर्ति तभी हो सकेगी जब संकलित पाठांशों एवं आधुनिक जीवन-परिवेश के बीच सेतु हो, अन्तःसम्बन्ध हो।

पाठ्यचर्या का चौथा लक्ष्य निश्चित किया गया - *शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार*। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए हमें यह ध्यान रखना होगा कि हमारी पाठ्यपुस्तकें सर्वथा निरवद्य हों, विवादमुक्त हों। संकलित पाठ राष्ट्रीय आदर्शों तथा संवैधानिक मान्यताओं के सर्वथा अनुकूल हों। पुरानी पाठ्यपुस्तकों में प्रायः 'मूलपाठ की रक्षा' के लोभवश उपर्युक्त तथ्यों की उपेक्षा की गयी। परन्तु आज का भारतीय समाज अत्यन्त संवेदनशील है। अतः यह ध्यान रखा ही जाना चाहिए कि किसी भी संकलित अंश से समाज के किसी भी वर्ग की भावना आहत न हो। पाठों से सर्वधर्म-समभाव, सर्वोदय तथा सामाजिक समानता आदि का समर्थन होना चाहिए। किसी भी वर्ग, जाति, समुदाय अथवा प्रवृत्ति की अवमानना नहीं होनी चाहिए और न ही किसी के प्रति प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रीति से कोई आक्षेप होना चाहिए।

पाठ्यचर्या का अन्तिम लक्ष्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, विशेषकर संस्कृत पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में। यह लक्ष्य है - *छात्रों को चिन्तन के लिए प्रेरित करना*। पाठ्यक्रम ऐसा बनाया जाना चाहिए जो छात्रों को स्वयं स्फूर्त बना सके। प्रायः शिक्षक छात्रों को 'निरुपाय' बनाता है यह कहकर कि 'कण्ठस्थ करने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं।'

शब्दरूप एवं धातुरूप कण्ठस्थ करते-करते अधिकांश छात्र निराश, कुण्ठित एवं हतप्रभ होकर संस्कृताध्ययन से विरत हो जाते हैं। छात्रों में एक भ्रम-सा व्याप्त हो जाता है कि संस्कृत में सब कुछ रटने से ही सिद्ध होगा। जबकि ऐसा बिलकुल नहीं है। कौन-सी ऐसी भाषा है जिसमें छात्र महत्त्वपूर्ण अंशों को कण्ठस्थ नहीं करता? विद्या का कण्ठस्थ होना तो प्रशंसनीय बात है, इसकी निन्दा कैसी?

परन्तु संस्कृत भाषा में प्रवीण होने के लिए सब कुछ रट डालने की कोई आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है तो केवल इस बात की कि छात्र सर्वत्र 'अध्यापकाश्रित' ही न हो। वह स्वयं भी कुछ सोचना विचारना अथवा करना सीखे। किसी पाठ को पढ़कर वह इतना समर्थ हो जाय कि पाठाश्रित लघु प्रश्नों का उत्तर दे सके, किसी अंश का आशय बता सके, रिक्त स्थानों की पाठ्यांश के आधार पर पूर्ति कर सके, प्रकृति-प्रत्यय का समुचित मेलन कर सके तथा योग्यता-विस्तार के अन्यान्य मानकों को भी आत्मसात् कर सके।

निष्कर्ष यह है कि संस्कृताध्यायी छात्र का संस्कृत के साथ नीर-क्षीर सम्बन्ध होना चाहिए न कि तिल-तण्डुलवत् संसृष्टि। यदि छात्र 'संस्कृतमय' नहीं हुआ, उसकी संस्कृत समझने, लिखने, बोलने की क्षमता विकसित नहीं हो पायी तो फिर संस्कृत पढ़ने का लाभ क्या हुआ? यह सब सम्भव है पाठ्यचर्या के उपर्युक्त लक्ष्यों को अपनाने से।

उपर्युक्त लक्ष्यों को चरितार्थ एवं अनुप्रयुक्त करने की दृष्टि से ही 'नवीन पाठ्यक्रम' की संकल्पना की गयी तथा नये मानदण्डों के आधार पर छठी, नवीं, तथा ग्यारहवीं कक्षा के छात्रों के लिए नयी पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है। इन पुस्तकों का प्रमुख वैशिष्ट्य है-

क - प्राचीन ग्रन्थांशों के साथ ही साथ आधुनिक संस्कृत रचनाओं का भी समावेश।

ख - अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की विविध अनूदित (संस्कृत में) रचनाओं का भी पाठ्यक्रम में समावेश।

ग - पाठ्यचर्या के विविध लक्ष्यों की पूर्ति हेतु नये अभ्यास प्रश्नों, टिप्पणियों एवं योग्यता विस्तार-उपायों का समावेश।

घ - शिक्षण-संकेतों का निर्देश।

पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को दृष्टि में रखकर सुधी प्राध्यापकों एवं विषय-विशेषज्ञों के समवेत प्रयास से निर्मित प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक निश्चय ही संस्कृताध्ययन के क्षेत्र में एक शुभारम्भ है। यह पाठ्यक्रम संस्कृताधीनी छात्रों में उन गुणों को विकसित करेगा जो पाठ्यचर्या के लक्ष्यरूप में विन्यस्त किये गये हैं।

पाठ्यपुस्तक-समिति के मुख्य परामर्शक के रूप में हमें मार्गदर्शन मिला है संस्कृत के प्रख्यात विद्वान् प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) का जो श्रेष्ठ कवि, समीक्षक, अनेक पाठ्यग्रन्थ-निर्माता एवं अनुभव के धनी कर्मठ विद्वान् हैं। विशेषज्ञ विद्वान् के रूप में हम लाभान्वित हुए हैं प्रो. केदारनारायण जोशी, आचार्य एवं अध्यक्ष,

संस्कृत अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन (म.प्र.) एवं प्रो. दीप्ति त्रिपाठी अध्यक्ष, संस्कृत विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय से जो पूर्व में भी राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद् की संस्कृत सम्बन्धी अनेक परियोजनाओं, संगोष्ठियों एवं उपक्रमों में अपना सक्रिय योगदान देते रहे हैं। समिति के अन्यान्य समस्त सदस्य भी विषय एवं भाषा के मर्मज्ञ, यशस्वी प्राध्यापक हैं।

प्रस्तुत सङ्कलन में बारह पाठ हैं। 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' नामक प्रथम पाठ ईशावास्योपनिषद् से सङ्कलित किया गया है। इसमें ईश्वर की सर्व-व्यापकता, कर्म की महत्ता, आत्मा की विशेषता तथा विद्या और अविद्या दोनों की उपादेयता का निरूपण एवं विद्या से अमरत्व की प्राप्ति का प्रतिपादन किया गया है।

द्वितीय पाठ 'रघुकौत्ससंवादः' महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंश महाकाव्य के पञ्चम सर्ग से संगृहीत है। इसमें राजा दिलीप के पुत्र रघु की दानवीरता का वर्णन है।

तृतीय पाठ 'बालकौतुकम्' महाकवि भवभूति द्वारा विरचित उत्तररामचरितम् नामक नाटक के चतुर्थ अङ्क से सङ्कलित किया गया है। इसमें चन्द्रकेतु द्वारा रक्षित राजा राम के अश्वमेधीय अश्व को देखकर आश्रम के बालकों में उत्पन्न कौतूहल तथा लव द्वारा घोड़े को आश्रम में ले जाकर बाँधने की घटना का मार्मिक चित्रण किया गया है।

चतुर्थ पाठ 'कर्मगौरवम्' श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय एवं तृतीय अध्यायों से सङ्कलित है। इसमें कर्म की महत्ता तथा कर्म की कुशलता का प्रतिपादन किया गया है।

पञ्चम पाठ 'शुकनासोपदेशः' महाकवि बाणभट्ट के द्वारा विरचित कादम्बरी नामक गद्यकाव्य से सङ्कलित किया गया है। इसमें राजा तारापीड का नीतिनिपुण एवं अनुभवी मन्त्री शुकनास राजकुमार चन्द्रापीड को राज्याभिषेक के पूर्व वात्सल्य भाव से उपदेश देते हैं और रूप, यौवन, प्रभुता तथा ऐश्वर्य से उद्भूत दोषों से सावधान रहने की शिक्षा देते हैं। यह प्रत्येक युवक के लिए उपादेय उपदेश है।

षष्ठ पाठ 'सूक्तिसुधा' में पण्डितराज जगन्नाथ, माघ, भवभूति, भारवि तथा भर्तृहरि नामक संस्कृत के कतिपय प्रतिनिधि महाकवियों की सूक्तियाँ सङ्कलित हैं।

सप्तम पाठ 'विक्रमस्यौदार्यम्' सिंहासनद्वात्रिंशिका नामक कथासंग्रह से उद्धृत है। इसमें उज्जयिनी के न्यायप्रिय, पराक्रमी, विद्याप्रेमी एवं उदारमना सम्राट् विक्रमादित्य की दानवीरता तथा उदारता का वर्णन किया गया है।

अष्टम पाठ 'भूविभागाः' मुगल सम्राट् शाहजहाँ के विद्वान् पुत्र दाराशिकोह द्वारा विरचित समुद्रसङ्गम नामक ग्रन्थ से संगृहीत है। इस पाठ में पृथ्वी के सात विभागों का रोचक वर्णन है। इसमें संस्कृत तथा फारसी भाषा के शब्दों का मञ्जुल मणिकाञ्चन समवाय परिलक्षित होता है।